5

मसीह के द्वारा मिलाप

कुलुस्सियों 1:21-23

आयतें 21 से 23 में पौलुस ने कुलुस्सियों की खोए होने की पिछली अवस्था की चर्चा की। यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने मिलाप के कारण यदि वे विश्वास में बने रहते तो उन्हें परमेश्वर के सामने पवित्र और निर्दोष प्रस्तुत किया जाना था।

उनकी पहले की स्थिति (1:21)

[21]तुम जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे।

''पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे'' (1:21)

पौलुस ने पहले उनकी पहली स्थिति इस प्रकार से बताई: **जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे।** इस आयत के अलावा ''निकाले हुए'' (*apallotrioō*) इफिसियों 2:12 और 4:18 में भी मिलता है जहां इसका अनुवाद ''अलग किए हुए'' है। इफिसियों में यह विशेषकर अन्यजातियों के लिए है, परन्तु यहां इसकी कुलुस्सियों की संगति के अन्दर अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए व्यापक प्रासंगिकता है (कुलुस्सियों 3:11)। ''बैरी'' (*echthros*) का अनुवाद आम तौर पर ''बैरी'' यानी शत्रु किया गया है (मत्ती 5:43)। कालांतर में कुलुस्सियों को परमेश्वर से निकाला गया था। उनके मन उसके बैरी थे, परमेश्वर की इच्छा के कारण नहीं बल्कि उसके विरुद्ध उनके अपने विद्रोह के कारण।

उनके व्यवहार ने उन्हें ऐसे पापपूर्ण कामों में लगा दिया था कि दूसरे सब लोगों की तरह उन्हें भी (रोमियों 3:23) पाप के कारण परमेश्वर से अलग कर दिया गया था (यशायाह 59:1, 2)। अपने विद्रोही मनों के कारण वे परमेश्वर से दूर हो गए थे जिस कारण वह उन से दूर हो गया था। अभक्तिपूर्ण सोच चुनौती देने वाले काम करवाती है। परिणाम यह होता है कि परमेश्वर उनके साथ जो उसके प्रति शत्रुता से काम करते हैं बैर रखता है (लैव्यव्यवस्था 26:21, 23, 24, 27, 28, 40, 41)। सांसारिक सोच उस मिलाप को स्वीकार करना कठिन बना देती है जिसे यीशु ने सम्भव बनाया है।

''मन'' (*dianoia*) को समझ और सोच का स्रोत माना जाना चाहिए। कई बार यह *kardia* का समानार्थक शब्द होता है, जो अच्छे या बुरे कामों का स्रोत हो सकता है। बुरे काम बुरे विचारों से जुड़े होते हैं (उत्पत्ति 8:21; भजन संहिता 10:3, 4)।

अन्यजातियों के पास परमेश्वर के अस्तित्व का चाहे पर्याप्त प्रमाण था परन्तु उन्होंने परमेश्वर की वास्तविकता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया (रोमियों 1:19, 20)। परमेश्वर को

उनका ठुकराना जान-बूझकर था (रोमियों 1:28)। पौलुस ने लिखा:

> इसलिए मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं (इफिसियों 4:17, 18)।

वे बुरे बन गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को अपनी सोच से निकाल दिया (रोमियों 1:28-32)।

बुराई करने वाले लोग परमेश्वर के शत्रु हैं ''हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है'' (याकूब 4:4)। परमेश्वर ने यीशु के बलिदान के द्वारा अपने शत्रुओं के लिए मेल सम्भव बनाया। ''क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?'' (रोमियों 5:10)।

मेल की आवश्यकता इस तथ्य पर आधारित है कि परमेश्वर पाप और विद्रोह से घृणा करता है (भजन संहिता 5:5; 11:5; नीतिवचन 6:16, 19; यिर्मयाह 12:8; इब्रानियों 1:9)। यदि बुराई करने वाले लोग ढिठाई से उसकी इच्छा को ठुकराने में लगे रहते हैं तो वह उन से घृणा करेगा और फिर उन से प्रेम नहीं करेगा (होशे 9:15)। उसका क्रोध उन पर बना रहता है जो यीशु की आज्ञा मानकर उसकी सच्चाई पर नहीं चलते हैं (यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; 2:5, 8; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6)।

परमेश्वर का न्याय पाप के दण्ड की मांग करता है। यीशु की मृत्यु के द्वारा इस शर्त को पूरा किया गया था, इस कारण परमेश्वर उन को जो यीशु की आज्ञा मानते हैं स्वीकार करने को तैयार है (इब्रानियों 5:9)। परमेश्वर ने तो पापियों को अपने साथ मिलाने के लिए अपना काम कर लिया है, अब उन्हें अपने शत्रुतापूर्ण व्यवहार को बदलकर मेल को ढूंढ़ना आवश्यक है।

मसीह की मृत्यु के द्वारा उनका मेल (1:22)

[22]उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर दिया है ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

''उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर दिया है'' (1:22)

कुलुस्से के लोग चाहे मन में परमेश्वर के बैरी थे और उसका क्रोध उनके ऊपर था, पर यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा मित्रता सम्भव कर दी। पौलुस ने कहा, **उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर दिया है।** यह विचार आयत 20 के वाक्यांश: ''सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले'' से मिलता है।

यीशु की मृत्यु से दो बातें हुई थीं: (1) उसने पाप की बाधा को हटा दिया जो मेल को रोकता था, और (2), अपनी करुणा और प्रेम के द्वारा उसने बैरी मनों वाले लोगों के लिए

परमेश्वर के समर्पित मित्र बनने का लक्ष्य दे दिया। यदि क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा दिखाया गया यीशु का कोमल लगाव विद्रोही मनुष्यजाति के मनों को नहीं छू सकता तो शायद और किसी बात से उन्हें परमेश्वर के मित्र नहीं बनाया जा सकता। इससे कम प्रेरणा के साथ आज्ञाकार अब्राहम को परमेश्वर का मित्र कहा गया क्योंकि वह अपने पुत्र इसहाक का बलिदान करने को तैयार था (याकूब 2:22, 23)।

आत्मा के रूप में यीशु पाप का बलिदान नहीं बन सकता था। देह की मृत्यु केवल मनुष्य के लिए हो सकती है (देखें मत्ती 10:28)। यीशु को मानवीय देह धारण करनी पड़ी थी (इब्रानियों 10:5) ताकि वह हमारे पापों के लिए मर सके। पशु बलि जो पापों को हटा नहीं सकती थी, केवल यीशु की आने वाली मृत्यु की परछाईं थी (इब्रानियों 10:1-4)। अपनी देह की मृत्यु के द्वारा यीशु ने परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग खोल दिया (इब्रानियों 10:19, 20)।

''शारीरिक देह'' (*to sōma tēs sarkos,* ''मांस रूपी देह'') शब्द उन मसीह विरोधियों की शिक्षा का उत्तर देते हैं जो इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु शरीर में आया था (2 यूहन्ना 7)। ज्ञानवादी या नॉस्टिक लोग यह मानते थे कि यीशु विशुद्ध आत्मा था जो कभी मानवीय देह में रहा ही नहीं। उनका मत था कि भौतिक या सांसारिक परमेश्वर के स्वभाव के बिल्कुल इतना विपरीत है कि वह मानवीय देह में नहीं रह सकता। पौलुस के द्वारा पवित्र आत्मा मसीही लोगों को ज्ञानवादी शिक्षकों की झूठी शिक्षा का खण्डन करने के लिए तैयार कर रहा हो सकता है (1 तीमुथियुस 4:1)। प्रेरित को 2:11 में शरीर पर और भी कहना था।

यीशु ने एक ज़िदी लड़के का दृष्टांत बताया जो अपने पिता के साथ मिल गया था। उसने अपने पिता के घर को छोड़कर उसकी सारी विरासत आवारागर्दी में (अपने पिता की बचत का आधा) इधर-उधर उड़ाकर स्वर्ग का और अपने पिता का पाप किया था। ऐसा करके उसने अपने पिता का गुनाह किया और अपने आपको उससे दूर कर लिया। फिर भी पिता उसे वापस ग्रहण करने को तैयार था। पिता पुत्र को लेने उसके पास नहीं गया बल्कि पुत्र पिता के पास लौट आया था (लूका 15:11-24)। पिता और पुत्र के बीच मेल पिता के घर में हुआ।

इसी प्रकार से मनुष्यजाति पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गई है। यीशु ने संसार के पापों को अपने ऊपर लेकर पिता के साथ मेल सम्भव बना दिया है (1 पतरस 2:24)। शरीर में यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने मेल को सम्भव बना दिया परन्तु मनुष्यजाति के लिए उससे मिलने के लिए मसीह में परमेश्वर से मिलना आवश्यक है।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस ने लिखा, ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:19)। उसने उन भाइयों को परमेश्वर से मेल करने के लिए समझाया (आयत 20)। परमेश्वर मसीह में पापों को क्षमा करने की राह देख रहा है। परमेश्वर के साथ मेल केवल मसीह में है; मसीह के बाहर कभी नहीं बताया गया। यीशु ने हमारे मेल का परमेश्वर के हिस्से का काम पूरा कर दिया है। लोगों को मसीह में आने के लिए कार्य करना पड़ेगा ताकि वे परमेश्वर से मिल सकें। एकता और मित्रता में परमेश्वर और मनुष्य का मेल यहीं पर हो सकता है। मसीह में प्रवेश बपतिस्मा के द्वारा होता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27)।

''ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक,
और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे'' (1:22)

पौलुस ने यीशु की मृत्यु का उद्देश्य बताया: *ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।* सारे पापों को मिटाने के लिए अपनी देह के बलिदान के द्वारा यीशु ने कुलुस्सियों के लिए पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष होना सम्भव बना दिया। उसने उन्हें मिला दिया ताकि वह पाप के दाग के बिना अपने सामने प्रस्तुत कर सकें। पौलुस ने उन लोगों की पवित्र स्थिति का वर्णन देने के लिए जिन्हें यीशु के सामने पेश किया जाएगा, तीन विशेषताएं बताईं:

1. ''पवित्र'' (*hagioi*) शुद्धता एक सकारात्मक स्थिति है। इस गुण ने कुलुस्सियों को संसार के बुरे लोगों से अलग कर दिया। 1:2 में इसी शब्द का अनुवाद ''पवित्र लोग'' हुआ है।
2. ''निष्कलंक'' (*amōmoi*) का अर्थ है कि कुलुस्सियों को यीशु के सामने बेदाग, दोषमुक्त, बिना कलंक के पेश किया जाना। उन्हें यीशु के लहू से शुद्ध किया गया था ताकि उन में कोई गलती न मिल सके। *Amōmoi* का इस्तेमाल कलीसिया के यीशु के लहू से शुद्ध किए जाने और पवित्र किए जाने के रूप में हुआ है (इफिसियों 5:26, 27; इफिसियों 1:4; यहूदा 24; प्रकाशितवाक्य 1:5 भी देखें)। इसके अलावा यह इब्रानियों 9:14 में और 1 पतरस 1:19 में यीशु की बात भी करता है, जहां उसे बलिदान के बेदाग मेमने से मिलाया गया। यह शब्द नये नियम में और कहीं नहीं मिलता।
3. ''निर्दोष'' (*anegklētoi*) का अर्थ है कि उन पर दोष का कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि यीशु ने उनके पापों के दाग को मिटाकर, अपने लहू से उन्हें मिला दिया था। नये नियम में केवल पौलुस ने ही इस शब्द का इस्तेमाल किया। उसने कुलुस्सियों को विश्वास दिलाया कि यीशु उन्हें प्रभु के दिन में दोष रहित होना पक्का करेगा (1 कुरिन्थियों 1:8)। एल्डरों या डीकनों के रूप में सेवा के लिए चुने जाने वालों के लिए आरोप के बिना होना आवश्यक था (1 तीमुथियुस 3:10; तीतुस 1:6, 7)।

ये तीनों शब्द यीशु के द्वारा उपलब्ध कराए गए मेल के कारण परमेश्वर के सामने पाप रहित होने के उसके विचार को व्यक्त करते हैं। पौलुस ने कहा कि कलीसिया जिसे यीशु ने शुद्ध किया है और बेदाग किया है जिन्हें वह अपने सामने पेश करेगा (इफिसियों 5:25-27)।

पापपूर्ण कामों के कारण कोई भी धर्मी नहीं है (रोमियों 3:9, 10) यानी परमेश्वर के सामने किसी में भी व्यक्तिगत पवित्रता, निर्दोषता या निष्कलंकता नहीं है। ये यीशु के काम के द्वारा मिलती है। पौलुस ने इफिसियों (1:4 और 5:27) में इसी विचार को व्यक्त किया। लोगों को परमेश्वर के सामने जो बात सही बनाती है वह यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध किया जाना है; जो लोग शुद्ध किए गए हैं अब वे दोषी नहीं हैं। सकारात्मक रूप में कहा जाए तो यीशु ने उनके लिए जो

विश्वास करते हैं अपने सामने ''पवित्र'' प्रस्तुत किया जाना सम्भव बनाया है; नकारात्मक रूप में कहें तो वह उन्हें ''निष्कलंक'' और ''निर्दोष'' बना सकता है। पापियों को शुद्ध किया जा सकता है ताकि वे ज़रा से भी दोष के बिना हो सकें। यह आवश्यक है क्योंकि कोई भी जिसमें पाप है (यूहन्ना 8:21) और वह अशुद्ध है (प्रकाशितवाक्य 21:27) स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा।

व्यवस्था (मूसा के द्वारा दी गई; यूहन्ना 5:45) उन पर आरोप लगाती जो इसका उल्लंघन करते थे और श्राप लाती थी (गलातियों 3:10)। यीशु का वचन उनका जो उसे ठुकराते हैं न्याय करेगा (यूहन्ना 12:48)। जिन्हें यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध किया जा चुका है उनके विरुद्ध कोई आरोप नहीं लगेगा और उन्हें कोई दोषी नहीं ठहराएगा। परमेश्वर उन पर आरोप नहीं लगाएगा क्योंकि उन्हें यीशु के लहू के द्वारा उसके साथ मिला दिया गया है। यीशु उन पर आरोप नहीं लगाएगा क्योंकि उसने उन के पाप उठा लिए हैं। शैतान उन पर आरोप नहीं लगा सकेगा क्योंकि उसे पराजित कर दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 12:10)। उनके विवेक भी उन्हें दोषी नहीं ठहराएंगे क्योंकि उन्हें बपतिस्मे के द्वारा (1 पतरस 3:21) शुद्ध कर दिया गया होगा (इब्रानियों 9:14; 10:22)। किसी के भी उनके विरुद्ध आरोप न लगाने पर वे निर्दोष ठहरेंगे।

सत्य के आज्ञापालन के द्वारा शुद्धिकरण (1 पतरस 1:22) बपतिस्मे के समय होता है जब व्यक्ति के सारे पाप धो दिए जाते हैं (प्रेरितों 2:38; 22:16)। यह शुद्ध किया जाना उनके लिए जारी रहता है जो ज्योति में चलते हैं और परमेश्वर के सामने अपने पापों को मान लेते हैं (1 यूहन्ना 1:7-9)। विश्वास में चलते रहने वालों को निरन्तर शुद्ध किया जाता है इस कारण वे न्याय के दिन यीशु के सामने पेश किए जाने के समय निर्दोष ठहरेंगे।

यीशु ने यह योजना क्रूस पर एक बलिदान के द्वारा उपलब्ध कराई है (इब्रानियों 7:27; 9:26-28; 10:10-12, 14)। उसे पाप के लिए बलिदान में अपने आपको बार-बार दिए जाने की आवश्यकता नहीं है। पाप के लिए अपना एक बलिदान पूरा कर देने के बाद यीशु बैठ गया। उसने अपना काम पूरा कर लिया ताकि वह बैठ सके, जिस करके अब उठकर दोबारा अपने आपको बलिदान करने की आवश्यकता नहीं है।

यीशु सिंहासन पर न्याय करने वाला होगा (मत्ती 25:31, 32; प्रेरितों 17:31; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1)। उसके लहू से शुद्ध हुए लोगों पर उनकी गलतियों के आरोप नहीं लगाए जाएंगे। क्योंकि उन्हें उसकी नज़र में शुद्ध माना जाएगा, उन्हें यीशु के सामने बेदाग पेश किया जाएगा।

उनकी आवश्यक वफ़ादारी (1:23)

[23]यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिस का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिस का मैं पौलुस सेवक बना।

''यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस
सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो'' (1:23)

इस जीवन में हमें परमेश्वर के सामने ''पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष'' प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। यह घटना केवल उन्हीं के लिए है जो वफ़ादार या विश्वासी रहते हैं: **यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो।** (''विश्वास की नींव'' वाक्यांश जो यूनानी भाषा में दो शब्द *tē pistei,* ''विश्वास'' है, सम्प्रदान कारक में है। ''की'' जोड़ना ''निरन्तर'' के कारक को बताने के लिए आवश्यक है।)

परमेश्वर के सामने निर्दोष पेश होना सशर्त है। यूनानी शब्द *ei* (''यदि'') में इसे व्यक्त किया गया है। परमेश्वर के सामने जिन्हें निर्दोष पेश किया जाएगा वे वो लोग हैं जो विश्वास में बने रहते हैं। एक बार का विश्वास काफ़ी नहीं है। हमें यीशु के द्वारा तभी शुद्ध उपस्थित किया जाएगा *यदि* हम विश्वास में बने रहते हैं। अनन्त जीवन उन्हें मिलेगा जो ''सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, आदर और अमरता की खोज में हैं ...'' (रोमियों 2:7)। उसके सामने जिन्हें निर्दोष पेश किया जाएगा वे वे लोग हैं जो विश्वास के द्वारा यीशु के पीछे चलना आरम्भ करके विश्वास में बने रहते हैं।

> पाठक निर्दोष नहीं हैं, का संकेत आयत 23 की सावधानी से चेतावनी से भी मिलता है: उनके लिए उद्धार की प्राथमिक स्थिति यह है कि वे विश्वास में पक्की तरह से जड़ पकड़े रहें और उस आशा के प्रति निर्णायक ढंग से समर्पित रहें जो उन्हें सुसमाचार से पता चली (तुलना 1:5)। ...[1]

न्याय के दिन छुड़ाए हुए लोगों के पापों को याद नहीं किया जाएगा। जब परमेश्वर पापों को क्षमा कर देता है तो उन्हें भुला दिया जाता है और याद नहीं रखा जाता (इब्रानियों 8:12)। यीशु के साथ ज्योति में चलते रहने और पापों को मान लेने की सुन्दरता इस बात में है कि उसका लहू उन्हें निरन्तर धोता रहता है (1 यूहन्ना 1:7-10)।

''यदि'' लिखने का पौलुस का अभिप्राय था कि जो लोग विश्वास में बने नहीं रहते हैं उन्हें पवित्र, नि:कलंक और निर्दोष पेश नहीं किया जाएगा। ''विश्वास की नेंव पर दृढ़ बने रहो'' का अर्थ है कि विश्वासत्याग की सम्भावना वास्तविकता है। जो लोग मसीह में विश्वास के कारण बने रहते हैं उन्हीं को परमेश्वर के सामने पेश किया जाएगा और उसके द्वारा स्वीकार किया जाएगा।

यदि वे विश्वास में बने रहते तो कुलुस्सियों ने ''नेंव पर दृढ़ बने'' रहना था और उस समाचार की आशा को ''जिसे'' उन्होंने सुना था नहीं छोड़ना था। ''विश्वास'' मसीह की शिक्षा का शरीर है।[2] हमारा लक्ष्य भी पौलुस के बताए विश्वास में बने रहना होना चाहिए।

''दृढ़'' (*tethemeliō-menoi*) यूनानी भाषा में पूर्णकालिक कृदंत है जो संकेत देता है कि कुलुस्से के लोग दृढ़ थे और उन्हें उसी स्थिति में बने रहना चाहिए था। यह किसी निर्माण की बुनियादी सामग्री देने का सुझाव देता है, जैसे मकान की या भूमि की नींव (मत्ती 7:25; इब्रानियों 1:10)। आत्मिक अर्थ में यह व्यक्ति के आत्मिक जीवन के लिए सुरक्षित आधार की बात है (इफिसियों 3:17)।

''बने रहो'' *hedraioi* पक्की तरह से जुड़े रहने का विचार देता है। ''नेंव पर दृढ़ बने रहो'' अच्छी तरह से बनी इमारत के टिकाऊ होने का संकेत हो सकता है जो पक्की नींव पर बनी हो। यीशु की शिक्षाओं को मानने वाले लोग एक पक्की नींव पर बने हैं जहां वे परीक्षा के समय में

दृढ़ और सुरक्षित रहेंगे (मत्ती 7:24-27)। वह हमारी आत्मिक चट्टान है (1 कुरिन्थियों 10:4)। कलीसिया उसी पर बनी है (मत्ती 16:18); और कोई नींव है ही नहीं (1 कुरिन्थियों 3:11)।

''ना छोड़ो'' को लंगर लगे जहाज़ के द्वारा समझाया जा सकता है जिसे भयंकर तूफ़ानों और खतरनाक लहरों के बावजूद एक पक्की स्थिति में रखा गया है। पौलुस ने इफिसियों को शिक्षा के हर झोंके से इधर-उधर न डोलने का निर्देश दिया (इफिसियों 4:14)। 1:5 में उसने ''आशा'' की बात की, जो कुलुस्से के भाइयों को सुसमाचार में मिली। वे उस आशा का प्रतिफल पा सकते थे यदि वे विश्वास में बने रहते। झूठे शिक्षक उन्हें अन्य शिक्षाओं को मानने के लिए मनाने की कोशिश कर सकते थे (2:8); परन्तु उनके लिए परमेश्वर को भाने के लिए, कुलुस्सियों के लिए यीशु की शिक्षा के नमूने को मानना आवश्यक था।

''जिसे तुम ने सुना है ... जिस का प्रचार ... किया गया;
और जिस का मैं, पौलुस, सेवक बना'' (1:23)

वह शिक्षा सुसमाचार ही था **जिसे तुम ने सुना, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया और जिसका मैं, पौलुस, सेवक बना।** कुलुस्सियों की पत्री में पौलुस ने यहां पहली बार ''मैं'' (उत्तम पुरुष एक वचन) का इस्तेमाल किया जो इस बात का संकेत है कि पत्र उसी ने लिखा।

कुलुस्सियों ने सुसमाचार इपफ्रास से ''सुना'' (देखें 1:7) था। जो उसने उन्हें सिखाया था वह वही सुसमाचार था जिसका प्रचार परमेश्वर के दूत हर जगह कर रहे थे (मरकुस 16:15)। मसीह का संदेश यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए, यानी हर किसी के लिए एक ही है (प्रेरितों 15:11; रोमियों 1:16; 2:6-11)। वही शर्तें, वही पाबन्दियां, वही छूटें, वही प्रतिज्ञाएं और वही आशिषें हर मसीही के लिए हैं।

सुसमाचार का महान संदेश ''आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में'' सुनाया गया था (आयत 23)। 1:6 की तरह ''सारी'' का अर्थ लेखक की ओर से एक वर्ग के अर्थ में सब कुछ है, न कि हर सम्भव बात। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि सुसमाचार पृथ्वी के हर क्षेत्र में सुनाया जा चुका था। लूका 2:1-3 में रोम की ओर से आदेश में कहा गया था कि *सारे* जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं, जिसका परिणाम यह हुआ कि ''सब लोग'' नाम लिखवाने के लिए गए। केवल रोमी जगत के लोगों के नाम ही लिखे गए थे न कि सारे संसार के हर व्यक्ति के। एलिय्याह के समय पड़े अकाल को ''सारे देश'' में बताया गया था (लूका 4:25) जिसका अर्थ था कि इस्राएल का सारा देश। ''सारा'' का दायरा कई बार सीमित होता है। यहां पर ''सारी सृष्टि'' का इस्तेमाल यहूदियों के अलावा दूसरे लोग थे जिन्हें सिखाया गया था; अन्यजाति संसार को सुसमाचार के निमन्त्रण में शामिल किया गया था।

पौलुस ने अपने आपको मसीह के इस सुसमाचार का ''सेवक'' (*diakonos*) बताया। 1:7 में इपफ्रास के सम्बन्ध में उसने इसी शब्द का इस्तेमाल किया, जहां इसका अनुवाद ''सेवक'' हुआ है।

सुसमाचार के सच्चे सेवक और मसीह के सेवक के रूप में पौलुस चाहता था कि कुलुस्से के लोग उसके संदेश की सर्वव्यापी होने को समझ लें। सुसमाचार सब मनुष्यों के लिए है चाहे

वे कहीं भी रहते हों।

प्रासंगिकता

मसीह के द्वारा मेल

कई बार दो जनों के बीच झगड़ा हो जाता है जिससे उनके बीच अलगाव हो जाता है। कई बार एक व्यक्ति दूसरे को नाराज कर देता है जिससे नाराज हुआ व्यक्ति उससे दूर हो जाता है। लोगों को फिर से मिलाने के लिए मेल आवश्यक है।

पाप के द्वारा मनुष्यजाति ने परमेश्वर को नाराज किया है और इससे मनुष्य और उससे अलगाव हो गया है। मेल आवश्यक है। मेल में तीन पक्ष होते हैं: नाराज़ करने वाला, नाराज़ व्यक्ति और मध्यस्थ। परमेश्वर ने पहले से ही उस टूटे सम्बन्ध को देख लिया था जो मनुष्य के पाप के कारण बनना था इस कारण उसने एक योजना बनाई, जिससे मेल सम्भव होना था।

मनुष्यजाति नाराज़ करने वाली है। आदम और हव्वा के पाप के समय से उनके सब वंशजों ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23)। परमेश्वर के ढंग का विद्रोह करने का परिणाम उससे अलगाव है। वह ज्योति है और उसमें जरा भी अंधकार नहीं है (1 यूहन्ना 1:5)। जो लोग पाप के अंधकार में चलते हैं उनकी उसके साथ संगति नहीं हो सकती (1 यूहन्ना 1:6)। हमारे पाप हमें परमेश्वर से अलग करते हैं (यशायाह 59:1, 2)। क्षमा न पाए हुए पापी अपने बुरे कामों के कारण परमेश्वर से दूर (इफिसियों 2:13) और बाहर किए गए हैं (कुलुस्सियों 1:21)।

परमेश्वर को नाराज़ किया गया है। परमेश्वर धार्मिकता से प्रेम और पाप से घृणा करता है (इब्रानियों 1:9)। उसका क्रोध हर प्रकार की अभक्ति से है (रोमियों 1:18)। वह झूठी गवाही देने वालों और भाइयों में झगड़ा करवाने वालों सहित (नीतिवचन 6:16-19) उन से घृणा करता है जो अपने आपको बुराई के लिए देते हैं (भजन संहिता 5:5; 11:5)। लोग परमेश्वर से इतना विद्रोह कर सकते हैं कि वह उन से घृणा करने लगे।

अपने न्याय और पवित्रता के कारण परमेश्वर पाप को बिना दण्ड दिए नहीं रहने दे सकता। यदि किसी ने किसी के घर में सेंध मारकर कुर्सियां-मेज़ उलट दिए हैं, फर्श पर कूड़ा फैंक दिया हो और घर की और चीज़ें तहस-नहस कर दी हों तो न्याय यही मांग करेगा कि जो कुछ गलत किया गया है उसे सुधारा जाए। इसका अर्थ होगा कि घर वाले को जो चीज़ टूटी है या खराब हुई है, उसका हर्जाना दिया जाए।

पाप परमेश्वर को नाराज़ करता है। परमेश्वर की अदालत में पाप का उचित दण्ड मृत्यु है (रोमियों 6:23)। सब लोग मृत्यु के योग्य हैं क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की धार्मिकता के अनुसार उनका जीवन नहीं है (रोमियों 3:23)। इस बात को समझने के लिए कि परमेश्वर को कौन सी बात नाराज़ करती है और उससे मृत्यु आ सकती है, हमारे लिए समझना आवश्यक है कि परमेश्वर पाप किसे मानता है। हम उन बातों में लगकर जिन्हें करना हमारे लिए संदेहास्पद है (देखें रोमियों 14:23); व्यवस्था के मापदण्डों के बाहर काम करके (1 यूहन्ना 3:4); अधार्मिक गतिविधियों में लगकर (1 यूहन्ना 5:17); या जो भलाई हम करना जानते हैं

उसे न करके (याकूब 4:17) पाप कर सकते हैं।

परमेश्वर के मापदण्ड से पाप को मापने पर हमें उसके साथ यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:10)। इसका अर्थ यह है कि हम सब ने परमेश्वर को नाराज़ किया है। यदि हम कहते हैं कि हम में कोई पाप नहीं है या हम ने पाप नहीं किया है तो हम अपने आपको धोखा देते हैं और परमेश्वर को झूठा बनाते हैं (1 यूहन्ना 1:8, 10)। अपने पापों के कारण हम अधार्मिकता हैं। हमारे पास कुछ नहीं है। जो पाप हम ने किए हैं उन्हें सुधारने के लिए ऐसा कुछ नहीं है जो हम कर सकें (इफिसियों 2:8, 9)।

यीशु हमारा मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)। केवल यीशु ही है जो परमेश्वर के साथ उसके और हमारे बीच मध्यस्थता कर सकता है, क्योंकि वह समान रूप में मनुष्य और परमेश्वर से जुड़ा है, और उसका मूल्य सारी मनुष्यजाति के मूल्य से बढ़कर है।

(1) यीशु मनुष्य बना ताकि वह हमें समझ सके और हमारी मध्यस्थता कर सके। वह हमारे जैसा बना ताकि वह ''दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक'' बन सके (इब्रानियों 2:17)। उसे हमारी निर्बलताओं के द्वारा स्पर्श किया जा सकता है क्योंकि ''वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला'' (इब्रानियों 4:15)। यदि वह मनुष्य न बनता तो उसने हमारी हालत को नहीं समझ पाना था जिससे वह हमारे लिए उचित ढंग से मध्यस्थता कर पाता।

(2) उसके ईश्वरीय होने का अर्थ है कि वह पिता के साथ बराबर खड़ा है और पिता द्वारा उसे हमारे मध्यस्थ के रूप में सम्मान दिया जा सकता है। यीशु मनुष्य और परमेश्वर के साथ समान रूप से जुड़ा है। देहधारी होकर (यूहन्ना 1:14) वह मनुष्य का पुत्र बन गया (मत्ती 9:6)। इसके साथ ही वह परमेश्वर का पुत्र है (लूका 1:35)। वह मनुश्य और परमेश्वर के बीच बड़ी अच्छी तरह से मध्यस्थता कर सकता है।

(3) यीशु ने मनुष्य के पाप अपने ऊपर लेकर और पापियों के लिए मृत्यु का दण्ड पाकर मनुष्य और परमेश्वर के बीच मित्रता सम्भव बना दी। ऐसा करने के लिए उसके लिए पाप रहित होना आवश्यक था। मनुष्य के पाप रहित पुत्र और परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसने अपने ऊपर हमारे पाप ले लिए ताकि हम धर्मी ठहर सकें (1 कुरिन्थियों 15:3; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:24; 3:18)।

(4) यीशु परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पापों को उठा ले जा सकता है (यूहन्ना 1:29)। मनुष्य की, विशेषकर पापी मनुष्य की मृत्यु सारे संसार के पापों का दाम नहीं चुका सकती। अपवाद बनाने के लिए किसी को सारी मनुष्यजाति के बराबर या बढ़कर मूल्य का होना आवश्यक था। यीशु ऐसा ही व्यक्ति था, क्योंकि वह सारे संसार से बढ़कर मूल्यवान था; इसलिए वह अपने ऊपर हम सब के पापों को लेकर पाप का हमारा कर्ज़ चुका सकता था। अपनी मृत्यु के द्वारा उसने क्षमा किए जाने का मार्ग खोल दिया। उसने हमारे लिए परमेश्वर के मित्र होना और परमेश्वर के साथ मेल होना सम्भव बना दिया।

(5) क्रूस पर बहे लहू के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के सामने हमें पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष पेश होने की सामर्थ देते हुए (1:22), हमारे लिए परमेश्वर के साथ सुलह करने का मार्ग दे दिया (1:20)। यही प्रतिज्ञा कलीसिया से की गई है जो उद्धार पाए हुए लोगों का समूह है (इफिसियों 5:23-27)।

हम नाराज़ करने वाले, पापी हैं और परमेश्वर हमारे पापों के कारण नाराज़ हुआ है। पाप के साथ अपनी मित्रता के कारण हम परमेश्वर के शत्रु बन गए हैं (याकूब 4:4); परन्तु यीशु ने परमेश्वर के साथ मित्रता सम्भव बना दी है। परमेश्वर ने ऐसा संसार के लिए अपने प्रेम के कारण (यूहन्ना 3:16) यीशु के द्वारा किया है (2 कुरिन्थियों 5:18, 19)।

परमेश्वर ने सब कुछ अपनी योजना के अनुसार और अपने साथ हमें मिलाने के लिए जो कुछ करना आवश्यक था, उसे कर दिया है। उसने हमें मेल के वचन के द्वारा इस मेल की जानकारी दी है, जिससे हमें पता चलता है कि अब हमारे पाप हमारे विरुद्ध नहीं होने चाहिए (2 कुरिन्थियों 5:19)। परन्तु मेल हमारे उत्तर की मांग करता है। इस बात को समझते हुए पौलुस ने यह विनती की: ''हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो'' (2 कुरिन्थियों 5:20)।

(6) वह स्थान जहां परमेश्वर और मनुष्य की मित्रता हो सकती है, मसीह यानी मेल मिलाप का स्थान है। ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया'' (2 कुरिन्थियों 5:19)। परमेश्वर के साथ मिलने और उसके मित्र बनने लिए हमारे लिए मसीह में होना आवश्यक है। मसीह में, हम बपतिस्मे के द्वारा आते हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27)। मसीह में, बने रहने के लिए हमें, उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है (1 यूहन्ना 2:3-5)।

हम में से कोई भी धर्मी नहीं है। हमारे पाप हमें परमेश्वर से अलग करते हैं। इसी कारण हमें अपने मध्यस्थ मसीह की आवश्यकता है। यीशु उसके कारण जो वह है, मेल करा सकता है।

मेल और मसीह की परिपूर्णता (1:20)

मसीह में परिपूर्णता के वास करने का शायद सबसे बड़ा लाभ मेल ही है। पाप के कारण मनुष्यजाति के अन्दर हर कोई परमेश्वर से अलग किया गया है (रोमियों 3:10, 23)। जो लोग अपने पापों में मरते हैं वह यीशु के साथ नहीं हो सकते। संसार की सृष्टि से पहले परमेश्वर की योजना यीशु के द्वारा मेल कराने की थी।

मेल यीशु की परिपूर्णता के कारण सम्भव है (आयत 20)। शान्ति उस लहू के द्वारा जो उसने क्रूस के ऊपर बहाया होती है (आयत 20)। परमेश्वर ने आदेश दिया है कि पाप केवल लहू बहाने के द्वारा ही क्षमा किया जा सकता है (इब्रानियों 9:22)। पशुओं का लहू पापों को नहीं मिटा सकता था (इब्रानियों 10:4)। केवल यीशु का लहू ही परमेश्वर की उपस्थिति में ले जा सकता है (इब्रानियों 10:19, 20)।

अपने लहू के द्वारा यीशु ने उन सब के लिए जो परमेश्वर से अलग किए गए हैं मेल के लिए अवसर उपलब्ध कराया है। पाप का मिटाया जाना मेल को सम्भव बना देता है। कोई कारोबारी व्यक्ति अपने साथी के उनके कारोबार में आवश्यकता पर सहायता न देने पर पार्टनरशिप तोड़ सकता है। जब तक भागीदार सुस्त है और काम नहीं करता तब तक उसका साथी उसके साथ काम करने से इनकार कर सकता है। वह भागीदार को फिर से बहाल कर सकता है यदि वह काम करे और अपने कर्ज़ चुकाए। यीशु ने पाप का हमारा कर्ज़ चुका दिया है और परमेश्वर के

साथ मित्रतापूर्वक सम्बन्ध सम्भव बना दिया है।

मेल-मिलाप और वैरी मन (1:21)

वैरी मनों वाले लोग परमेश्वर की इच्छा को मानना नहीं चुनते हैं। वे हठी और कठोर मन के लोग हैं; वे ''विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते वरन अधर्म को मानते हैं'' (रोमियों 2:5, 8)। जब तक कोई व्यक्ति पाप को अपने और परमेश्वर के बीच खड़ा रहने देता है, तब तक वह परमेश्वर का शत्रु है (याकूब 4:4)।

जब लोग बुरे कामों में लगते हैं तो वे परमेश्वर से अलग हो जाते हैं। परमेश्वर की इच्छा को पूरी न कर पाना उन्हें उसकी दृष्टि में बुरे बना देता है। परमेश्वर धार्मिकता से प्रेम रखता है और अधर्म से बैर रखता है (इब्रानियों 1:9)।

एक माता अपने बच्चे को दिल से प्यार करती है, परन्तु यदि बच्चा हर बात को जो उसके लिए पवित्र है ठुकराकर मां के दिल को तोड़ना जारी रखता है तो वह अपने बच्चे को यह बताकर अपनी नाराज़गी दिखाएगी कि जब तक वह उसे दुख देता है, तब तक उसका उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं होगा। पाप के प्रति परमेश्वर की ज़बर्दस्त भावनाएं हैं। जो लोग परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ते हैं वे ऐसे विद्रोह से अपने आपको उससे अलग कर लेते हैं।

मेल और नई सृष्टि (1:22, 23)

यीशु के द्वारा मेल हमें पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष बनाता है (आयत 22)। पानी के गिलास में एक खतरनाक कीटाणु पूरे गिलास को गंदा कर देता है। इसी प्रकार से पाप न केवल एक भाग को बल्कि पूरी आत्मा को गंदा कर देता है। जो लोग आत्मिक रूप में अशुद्ध हैं वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते (प्रकाशितवाक्य 21:27)। अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु ने सारे पाप को मिटाना सम्भव बना दिया है ताकि हम न्याय के दिन में बिना दोष के हो सकें।

टाइप करने वाला व्यक्ति हो सकता है कि कई गलतियां कर दे, परन्तु यदि हर गलती को सुधार दिया जाए, तो वह गलती रहित पृष्ठ बना सकता है। यीशु उस लहू के द्वारा जो उसने बहाया हमारे जीवनों को पाप रहित बना सकता है। पाप क्षमा हो जाने पर उन्हें दोबारा कभी याद नहीं किया जाएगा (इब्रानियों 8:12)। लोगों का समूह, जिसे यीशु बिना किसी पाप के अपने सामने प्रस्तुत करेगा वह कलीसिया है (इफिसियों 5:25-27)। वह ऐसा कर सकता है क्योंकि उस ने वचन के साथ धोकर कलीसिया को शुद्ध करने के लिए अपने आपको दे दिया। बैंक में पैसे न होने पर चैक काटने का कोई फायदा नहीं होता। इसी प्रकार से जल और वचन में लोगों को पाप से शुद्ध करने की अपने आप में कोई सामर्थ नहीं है; परन्तु उनके द्वारा यीशु के लहू की सामर्थ के कारण लोगों को क्षमा किया जाता है।

जो लोग विश्वास में बने रहते हैं (आयत 23) उन्हें पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष प्रस्तुत किया जाएगा। यह प्रतिज्ञा यीशु के वफ़ादार रहने पर निर्भर करती है। वह दूल्हा है; कलीसिया का हर सदस्य मसीह की दुल्हन है, अपने पति के साथ दुल्हन के रूप में यीशु के साथ जुड़ा है। पति बेवफ़ा पत्नी को तलाक दे सकता है (मत्ती 19:9) और यीशु उन मसीही लोगों से जो उसके वफ़ादार नहीं हैं अपना सम्बन्ध तोड़ लेगा (यूहन्ना 15:4-6)। यीशु के लहू की सिद्ध करने वाली

सामर्थ के कारण जो लोग विश्वास में बने रहते हैं उन्हें भरोसा हो सकता है कि उनहें दूल्हे द्वारा आनन्द से दुल्हन को ग्रहण करने की तरह यीशु द्वारा ग्रहण किया जाएगा।

विश्वास में बने रहो (1:23)

परमेश्वर के सामने हमारा निष्कलंक पेश किया जाना यीशु के काम और हमारी वफ़ादारी पर निर्भर है। यह संकेत देने के लिए कि परमेश्वर के साथ हमारा खड़ा रहना शर्त सहित है, पौलुस ने ''यदि'' शब्द का इस्तेमाल किया (आयत 23)। हमें यह समझाने के लिए कि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो हमें विश्वास में बने रहना आवश्यक है, यीशु और नये नियम के लेखकों द्वारा कई चेतावनियां दी गई हैं।

परमेश्वर की आशिषें प्राप्त करने के लिए हमें ...

- यीशु के चेले बनने के लिए उसके वचनो में बने रहना और स्वतन्त्र होने के लिए सत्य को जानना आवश्यक है (यूहन्ना 8:31, 32)।
- यीशु में बने रहना और उसके लिए फल लाना आवश्यक है (यूहन्ना 15:2-6)।
- उसके प्रेम में बने रहने के लिए उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है (यूहन्ना 15:9, 10)।
- महिमा, आदर और अनन्त जीवन पाने के लिए भलाई करने में लगे रहना आवश्यक है (रोमियों 2:7)।
- परमेश्वर की दयालुता में बने रहना आवश्यक है (रोमियों 11:22)।
- पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष प्रस्तुत होने के लिए विश्वास में बने रहना आवश्यक है (कुलुस्सियों 1:22, 23)।
- उद्धार को पक्का करने के लिए मसीह की शिक्षाओं में बने रहना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 4:16)।
- उसका घराना माने जाने के लिए अपने विश्वास और आशा को थामे रखना आवश्यक है (इब्रानियों 3:6)।
- मसीह के सहभागी होने के लिए अन्त तक अपने भरोसे को थामे रखना आवश्यक है (इब्रानियों 3:14-16)।
- आशीषित होने के लिए स्वतन्त्रता की व्यवस्था में बने रहना आवश्यक है (याकूब 1:25)।
- पिता और पुत्र को पाने के लिए यीशु की शिक्षाओं में बने रहना आवश्यक है (2 यूहन्ना 9)।

हमें विश्वास से फिरने के विरुद्ध भी चेतावनी दी गई है। बोने वाले के दृष्टांत में यीशु ने परीक्षाओं के कारण हट जाने की बात की (लूका 8:13)। पौलुस अपने शरीर को मारता-कूटता था ताकि वह अयोग्य न हो जाए (1 कुरिन्थियों 9:27)। उसने पीछे हटने के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए इस्राएल का उदाहरण दिया (1 कुरिन्थियों 10:6-12; इब्रानियों 4:11)। मसीही लोग

इतने दूर गिर सकते हैं कि वे परमेश्वर की ओर न मुड़ सकें (इब्रानियों 6:6)।

पवित्र शास्त्र समझाता है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से (गलातियों 5:4) और अपने विश्वास से (1 तीमुथियुस 4:1) गिर सकते हैं। अपनी ''शपथ'' से हट जाना एक और ढंग है जिससे हम गिर सकते हैं (1 तीमुथियुस 5:12)। हमें सच्चाई में दृढ़ बने रहना आवश्यक है न कि इससे मुंह फेर लेना।

परमेश्वर द्वारा प्रतिफल पाने के लिए हमें अन्त तक सहते रहना (मत्ती 24:13), थकना नहीं (गलातियों 6:9), अपने उद्धार के लिए परिश्रम करना (फिलिप्पियों 2:12), यीशु की बात मानना (इब्रानियों 5:9), मरने तक विश्वास योग्य रहना (प्रकाशितवाक्य 2:10), संसार से हार न मानना (2 पतरस 2:20), और परमेश्वर की इच्छा को मानना (1 यूहन्ना 2:15-17) आवश्यक है। हमें जीवन की पुस्तक में से अपने नामों को मिटाए जाने से रोकने के लिए जीवन की बुराइयों पर विजय पाना आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 3:5)। जिन के नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं उन्हें आग में फैंक दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:15)।

मसीही लोगों को पीछे हटने और खो जाने के विरुद्ध चौकसी करनी चाहिए। अनन्त राज्य में प्रवेश पक्का करने के लिए हमें अपने विश्वास में कुछ गुणों को जोड़ना आवश्यक है (2 पतरस 1:5-11)। यदि हम इन चीज़ों को करेंगे तो हम कभी गिरेंगे नहीं।

यीशु ने हमारे ऊपर किसी आरोप के बिना हमें परमेश्वर की सामने पेश किए जाने को सम्भव बना दिया है। परन्तु उसके लिए ऐसा करने के लिए हमें विश्वास में बने रहना आवश्यक है। यदि हम परमेश्वर के जीवन के मार्ग पर नहीं चलते हैं तो हमें काट दिया जाएगा; यदि हम उसके पीछे चलते हैं तो हम कभी गिरेंगे नहीं (यूहन्ना 15:6; रोमियों 11:22)।

टिप्पणियां

[1]डेविड एम. हे, *कोलोसियंस,* अबिंग्डन न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 2000), 68. [2]इफिसियों 4:5; फिलिप्पियों 1:27; 2:17; 1 तीमुथियुस 1:2; 3:9; 4:1; 5:8; 6:10, 21; 2 तीमुथियुस 3:8; 4:7; तीतुस 1:1, 13; इब्रानियों 12:2; यहूदा 3 सहित कई अन्य वचनों में ''विश्वास'' का इस्तेमाल इसी अर्थ में किया गया है।